संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ४३ ● २७ अक्टूबर, २०१५ आश्विन शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

ढोंग पाखण्ड नारी शोषण मुक्त समाज बनाने के लिए आर्य समाज सजग प्रहरी बनकर काम कर रहा है

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज वेद मंदिर राजाजी पुरम् लखनऊ का वार्षिकोत्सव एवं श्राद्ध दिवस दिनांक १५ से १८ अक्टूबर २०१५ तक धूमधाम से आयोजित किया गया। अंतिम दिन दिनांक १८ अक्टूबर को श्राद्ध दिवस समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में पधारें। समारोह में पहुंचते ही समाज प्रधान आचार्य आनन्द मुनि मनीषी (आनन्द बरनवाल) मंत्री श्री निरंजन सिंह सहित सभी पदाधिकारियों ने उनका भव्य माल्यार्पण व शाल उढ़ाकर स्वागत किया।

प्रधान जी ने भारी संख्या में उपस्थित आर्य नर नारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''पराधीन भारत में जब सारे देशवासी ढोंग पाखण्ड जाति पांति ऊँच नीच के भेद के दलदल में फंसे थे तब महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ उन्होंने देश की दयनीय दशा पर गंभीर चिन्तन करके पाया कि पराधीनता, देश की दयनीयता का मूल ढोंग, पाखण्ड, जाति पांति ऊँच नीच का भेद, मातृशक्ति का पद दलन है। उसे पैरों की जूती समझा जा रहा है तथाकथित ब्राह्मण धर्म के ठेकेदार बनकर धर्म के नाम पर समाज को बरबाद कर रहे हैं। वे यह कहकर कि गुरू जो कहें उसमें कोई प्रश्नोत्तर करना पाप हैं गुरू का वाक्य ब्रह्म वाक्य हैं। सभी को धर्म भीरू बना रहे है।

महर्षि ने प्रबल उद्घोष किया कि हमारा देश वेद ज्ञान से वंचित हो गया है। पुराण आदि मनुष्य कृत रचित ग्रंथ धर्मशास्त्र माने जा रहे हैं इसी से हम सभी मति भ्रष्ट हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि वेदों की ओर लौटो वेद ज्ञान ही मानव निर्माण, समाज रक्षण का संविधान है। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश रूपी अनमोल ग्रंथ की रचना की जिसने जादू का काम किया उसे पढ़ कर देशवासी सत्य असत्य धर्म अधर्म को समझने लगे। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिखकर वेद के सत्य ज्ञान के निरूपण का दीपक जलाया।

संस्कार विधि पुस्तक निर्माण करके समाज को जन्म से मृत्यु पर्यन्त जीवन जीने की कला को समझने का अवसर दिया। आर्य समाज की स्थापना करके सदैव समाज को सभी बुराइयों से बचने व सही जीवन जीने का रास्ता दिखाने के लिए उसे आन्दोलन के रूप में शुरू किया। यह आन्दोलन पूरी तरह से सभी को सही मार्ग दिखायेगा, समाज में जागृति आयी स्वराज्य आन्दोलन चला देश स्वाधीन हुआ। महर्षि के सारे मन्तव्य भारत के संविधान में समाहित किए गये। नारी शिक्षा का विरोध करने वाले सभी अपनी बेटियों की ऊँची से ऊँची पढ़ाई की व्यवस्था कर रहे हैं। नारी ऊँचे से ऊँचे पदों पर पहुंच कर हर क्षेत्र में आगे से आगे बढ़कर काम करके मातृशक्ति का सम्मान बढ़ा रही हैं। लेकिन तथाकथित धर्मगुरू, टी. वी. चैनलों के माध्यम से अपना ढोंग पाखण्ड विविध रूप में फैलाने में लगे हैं। नारी के शोषण का भी नया रूप हो रहा है। आज के इस वैज्ञानिक प्रगतिशील युग में टी.वी. चैनल्स किसी भी बात के प्रसार का प्रमुख साधन है। अतः सही वाद कहने के लिए आर्य समाज के चैनल्स की आवश्यकता है।

आज भी समाज में मृतक श्राद्ध और तर्पण की परम्परा चालू हैं। जबकि श्रद्धा से सेवा सुश्रूषा करके उससे वृद्धों को तृप्त करने का नाम श्राद्ध व तर्पण हैं। यह केवल जीवित व्यक्तियों के साथ ही संभव है।

आर्य समाज वेद मंदिर राजाजीपुरम् लखनऊ ने सर्वप्रथम जीवित पितरों का श्राद्ध और तर्पण करने का क्रियात्मक संदेश दिया जिसका परिणाम है आज अन्य आर्य समाजें भी अपने यहां जीवित पितरों के श्राद्ध समारोह करने का आयोजन करने में उत्साह प्रदर्शित कर रही हैं। आर्य समाज राजाजीपुरम् के पदाधिकारीगण इस कार्य के प्रारम्भ करने के कारण अभिनन्दनीय हैं।

जैसे नित धूल उड़कर गंदगी फैलाती है वैसे ही नित नये नये तरीके से ढोंग पाखण्ड भी फैलाये जा रहे हैं। आर्य समाज इन सभी बुराइयों से समाज को बचाने के लिए सदैव सजग प्रहरी की भांति जन जन को जगाने का कार्य कर रहा है। पहले जब अन्य प्रचार के साधन नहीं थे तब आर्य समाज के प्रचारक वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिए जगह जगह खड़े होकर गुहार लगाते थे। किसी सपेरे को कहा कि तुम्हें ५० रूपये देंगे तुम भीड़ जुटाओ, जब काफी

शेष पेज ६ पर देखें....

वेदामृतम्

त्वमंग प्रशंसिषो, देवः शविष्ठ मर्त्यम्।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डिता, इन्द्र ब्रतीमि ते वचः।

(अंग) हे प्रिय (शविष्ठ) सबसे अधिक बली (इन्द्र) परमात्मन्! (देवः) दानी, प्रकाशमान और प्रकाशक (त्वं) तू (मर्त्य) मनुष्य की (प्रशंसिष) प्रशंसा कर (उसे साधुवाद और शाबाशी दे)। (मघवन्) हे ऐश्वर्यशालिन्! (त्वत्) तुझसे अतिरिक्त (अन्यः) अन्य (मर्डिता) सुखदाता (न) नहीं (अतः) (ते) तेरे लिए (वचः) प्रार्थना वचन (ब्रबीमि) बोल रहा हूँ।

इन्द्र प्रभु देव है, सबसे बड़े दानी और स्वयं सद्गुणों से प्रकाशमान तथा अन्यों को प्रकाशित करने वालें है। वे शविष्ठ है सबसे अधिक बलवान हैं अतएव सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के सम्राट है। वे मर्डिता है, शरणागत पर सुख की वर्षा करके उसे निहाल कर देने वाले हैं। उनसे बढ़कर अन्य कोई सुखदाता नहीं है। सुखदाता होने का अभिमान करने वाले सैकड़ों है पर उनका दिया सुख सच्चा सुख नहीं होता बल्कि कभी कभी वह किसी बड़ी विपदा का कारण बन जाता है। प्रभु के सुख के आगे सांसारिक जनों के लिए हुए सुख निःसार है, तुच्छ हैं।

हे इन्द्र देव! हे बलियों के बली! हे विश्व सम्राट! तुम्हीं मेरे प्रशंसक बनो, तुम्हीं मेरे मर्डिता बनो। अन्य सबको छोड़कर तुम्हारे ही सम्मुख मैं स्तुति वचनों और प्रार्थना वचनों को बोल रहा हूँ। तुम्हीं मुझे आशीष दो, तुम्हीं मुझे सत्पथ पर अग्रसर करो। मैं आज से सर्वात्मना तुम्हारा हूँ।

-डा. रामनाथ वेदालंकार

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

नित नये राजनीतिक दलों का गठन देश के लिए हितकारी नहीं

राजनीति मानव को राष्ट्र निर्माण राष्ट्र संरक्षण का ज्ञान देने का एक शास्त्र है। पहले राजनेता उसके माध्यम से ही राष्ट्र निर्माणकारी योजनाओं का सृजन राष्ट्र संरक्षण की व्यवस्था करते थे। पहले राज व्यवस्था थी। राजा के मंत्री राजनीति के परामर्शदाता बनकर सभी प्रकार की उन्नति में योगदायी बनते थे। द्वापर युग के अंतिम चरण में राजनीति शास्त्र की व्यवस्था चरमरायी फलतः सभी राजे आपस में ही लड़कर नष्ट हो गये। परंतु राष्ट्र तो था ही जो भी थे वे जैसे तैसे राष्ट्र को चला रहे थे। हमारा देश धन धान्य से समृद्ध था इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था। विदेशी हमारे धन को लूटने का उपाय करने लगे। पहले विदेशी यवनों ने लूटा अपना घर भरा हमें कंगाल तक बनाया और हमें अपना गुलाम बनाया। उसके बाद अंग्रेजों ने बड़ी चालबाजी से यहां आकर हमें लूटा अपना गुलाम बनाया हम गुलामी की जंजीरों में जकड़ गये। अंग्रेजों ने सदा हमें गुलाम बनाये रखने के लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था बदल डाली। हमारा इतिहास बदल डाला अपनी शिक्षा व्यवस्था द्वारा आर्य को विदेशी कहा। आदिवासियों को जो अशिक्षित थे उन्हें भारत का निवासी कहकर आदिवासी और आर्यो में भेद भाव बढ़ाना शुरू कर दिया। अपनी शिक्षा व्यवस्था को सभ्य नागरिक बनाने का सूत्र बताया। हम अपना अस्तित्व ही भूलने सा लगे। उनकी दासता में ही अपने को सुरक्षित मानने लगे। पंडे पुजारी ढोंग फैलाकर हमें मन से कमजोर बना रहे थे, अकर्मण्य बना रहे थे।

हमारे सौभाग्य से उस विकराल काल में महर्षि दयानन्द सरस्वती का आगमन हुआ। जिन्होंने अपने गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द दण्डी से देश की दुर्दशा से उबारने का पाठ पढ़ा और वह कार्य क्षेत्र में उतर कर सभी विकारों पर घोर प्रहार किया। सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ की रचना करके हमारे लिए ज्ञान का प्रकाश फैलाया। सभी बुराइयों से रहित स्वयं समाज व राष्ट्र को बनाने के लिए हम में जागृति आने लगी। स्वराज्य प्राप्ति की भावना हममें बनने लगी। आर्य समाज की स्थापना आंदोलन के रूप में करके हमें सदैव जागृत रहने व घर समाज व राष्ट्र को समुन्नत रखने का पाठ पढ़ाया। स्वराज्य आन्दोलन चला अंग्रेजों ने जब देखा हमें अब जाना ही पड़ेगा तो बड़ी ही चतुराई से समाज में हिंदू मुस्लिम का भेद भरना शुरू किया उनके भेद भाव भरने से मुहम्मद अली जिन्ना ने हिन्दू मुस्लिम के भेद के आधार पर भारत को खण्डित करने की योजना बना डाली जिसको हमारे नेताओं ने मजबूरी में स्वीकार किया और देश के दो टुकड़े भारत और पाकिस्तान हो गये।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में सुशासन के लिए पूर्व की भांति प्रजातांत्रिक व्यवस्था का मार्ग दर्शन दिया था। आजादी के बाद हमारे देश का संविधान बना जिसमें देश को प्रजातंत्र घोषित किया गया। जनता से निर्वाचन द्वारा प्रतिनिधियों के निर्वाचन का निर्णय लिया गया। निर्वाचन के द्वारा हमारी जब सरकार बनी, विधान परिषद, विधान सभा, लोक सभा, राज्य सभा के नाम से सुशासन स्थापित करने के लिए सभायें गठित की गयी। लगभग १८-२० साल तक यह व्यवस्था सही ढंग से चली भारत को विश्व के शीर्ष पर पहुंचाया। परंतु बाद में धीरे धीरे राजनेताओं में स्वार्थ की भावना जगने लगी सत्ता पाने या पायी सत्ता को बचाने के उपाय होने लगे जिससे राजनीति का सही स्वरूप बिगड़ने लगा। अपना वोट बैंक बनाने के लिए वर्ग भेद फैलाया जाने लगा। फिर भी जैसे तैसे प्रजातंत्र का नाम चल ही रहा था। धीरे धीरे राजनेताओं में महत्वाकांक्षा बढ़ने लगी अहंकार जड़ जमाने लगा अतः अनेकों राजनीतिक दलों का गठन होने लगा। अनेक दलों के बनने से वोट बैंक का सौदा आपस में राजनीति का केन्द्र बनने लगा।

आज इतनी स्थिति विषम हो रही है कि हर रोज नयी नयी पार्टियों का गठन पार्टी में जरा से मतभेद से अलग होकर तुरंत अलग पार्टी बनाने का दौर चल पड़ा है। ऐसी परिस्थिति में देश की क्या दशा होगी समझ में ही नहीं आता।

देश के सभी बुद्धिजीवियों प्रबुद्ध राजनेताओं सामाजिक संस्थाओं को इस विषय पर गंभीर चिन्तन करके राष्ट्र को संगठित समृद्ध और सुख समृद्धि से पूर्ण बनाने का मार्ग खोजने का प्रयत्न करना होगा। मेरी दृष्टि में सुशासन के लिए अनेक दलों की नही नेताओं में राष्ट्रोन्नति के लिए अपने अपने विचारों का आपस में आदान प्रदान करके उस पर गहन मंथन करके सुमार्ग निकालना चाहिए अहं का टकराव देश के लिए घातक होगा। रोज नये दलों का गठन देश के लिए अहितकारी होगा। उसका सर्वथा परित्याग करके शुद्ध मन मस्तिष्क से विचारों का आदान प्रदान करके प्रजातंत्र को सुव्यवस्थित रखने का संकल्प लेना चाहिए। निश्चय ही ऐसा संकल्प करने पर राष्ट्र को टूटने से बचाकर सुगठित सुव्यवस्थित बनाने में समर्थ होंगे और अपने पूर्वजों की भावनाओं को पूर्ण करके भारत को विश्व का सिरमौर बनाने में समर्थ बन सकेंगे।

सम्पादक

आर्य वीर दल है जहां-आर्य समाज है वहां

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

सभी को सजग बनाता है आर्य वीर दल। सभी को सम्मान दिलाता है आर्य वीर दल।।

आर्य वीर दल का सम्बन्ध आर्य समाज से पिता पुत्र जैसा है आर्य वीर दल पुत्र है और आर्य समाज पिता है जैसे बिना पुत्र के पिता अधूरा है वैसे ही आर्य वीर दल के बिना आर्य समजा अधूरा है निष्क्रिय है शरीर में जैसे हाथ, पांव, मुख, उदर सभी अपने अपने स्तर पर महत्वपूर्ण हैं वैसे ही आर्य वीर दल हाथ-पांव का कार्य करेगा और आर्य समाज सिर एवं उदर का कार्य करेगा। आर्य समजा में जीवन्त शक्ति प्रदान करने वाला गति एवं आशा की किरण आर्यवीर दल से ही प्राप्त होगी। आर्य समाज के अधिकारी धीरे धीरे बूढें होकर विदा हो जायेंगे फिर पीछे से उसकी पूर्ति एवं प्रगति आर्य वीर दल के माध्यम से ही हो सकती है। जहां जहां आर्य वीर दल की शाखायें चलती हैं अथवा चलती थी या आर्य वीर दल के प्रति रूचि और समर्पण है, आर्य वीरों को समय समय पर प्रोत्साहित किया जाता है वहां वहां आर्य समाजों में नव उत्साह हैं। आर्य वीर दल उ.प्र. के माध्यम से मुझे पूरे प्रदेश में घूमने का अवसर मिला है कुछ समाजें ही बच पाई हैं जहां जहां भी गया सर्वत्र इस बात को गंभीरता से देखा जा रहा है कि आर्य समाज मंदिर बहुत बड़े हैं और हर प्रकार की सुख सुविधायें है। अभाव है तो आने वाली युवा पीढ़ी का शहरों में विशेष रूप से देखने में आता है साप्ताहिक सत्संगों में भी आशा जैसी उपस्थिति नहीं है और उसमें भी ५०-६० से ऊपर की आयु के लोग ही अधिक होते हैं। दैनिक यज्ञों में तो स्थिति चिंतनीय है कहीं चार पांच लोग ही पर्याप्त हैं। १० से अधिक किसी भी आर्य समाज में दैनिक याज्ञिक नही आते यह पूरे देश की स्थिति हैं। वार्षिक सम्मेलन पर कुछ उपस्थिति अधिकारियों के बच्चों की दिखाई देती है। वह भी वहां जहां आर्य वीर दल की शाखायें चलती है अथवा उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है गाजीपुर की शताब्दी पर मुझे जाने का अवसर मिला वहां के अध्यक्ष जी से मिला तो वहां कोई युवक आर्य समाज के कार्यक्रम में नहीं। पूछने पर बताया कि क्या करें कोई आता ही नहीं हैं। मुझे वहां पर कहना ही पड़ा कि आपके बाद क्या होगा?कभी सोचा भी है आप अपने परिवार के विषय में जैसा चिन्तन करते हैं कि इसकी प्रगति भी हो और सुरक्षा भी हो वैसा ही आर्य समाज के विषय में भी सोचना पड़ेगा। अपने बच्चों को पढ़ाते हैं उनके ऊपर खर्च करते हैं बार बार उनकी सभी सुख सुविधाओं पर चिन्तन करते हैं वैसे ही आर्य वीर दल के विषय में सोचना होगा। जहां भी थोड़ा सा प्रयास किया है वहां आर्य समाज संतोषप्रद स्थिति में हैं। मुझे नाम लेने में कोई संकोच नहीं होता हापुड़ आर्य समाज का जो स्वरूप है वह मूल में आर्य कुमार सभा (आर्यवीर दल) है। आर्य समाज पिलखुवा में आर्य वीरों की संख्या आज आर्य समाज में सक्रिय होकर उसे युवक बना दिया हैं। लल्लापुरा वाराणसी में आप जाकर देखें सभी अधिकारी कार्यकर्ता आर्य वीर दल के कारण हैं। वहां के पुरानी पीढ़ी के लोग भी आर्य वीर दल के अधिकारी रहें हैं। कृष्ण नगर इलाहाबाद में भी स्थिति यही है मुरादाबाद हरथला कालोनी आर्य वीर दल की ही देन हैं। डिबाई बुलन्दशहर खैर, अलीगढ़ शहरों से ज्यादा अच्छी स्थिति कस्बों ओर ग्रामीण आर्य समाजों की इसलिए है कि वहां पर युवकों में आर्य संस्कार सुरक्षित है पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव अधिक नहीं हुआ है। गुरूकुलों को भी जहां जहां देखने का सौभाग्य मिला वहां आर्य वीर दल की यदि शाखा लगती है तो दिनचर्या और अन्य अनुशासन व्यवस्था में उत्तम हैं।

अन्य शिक्षण संस्थाओं की भी यही स्थिति हैं- पढ़े लिखे को फारसी क्या?हाथ के अंगन को आरसी क्या।

आज आप स्वयं परीक्षण निरीक्षण करके अनुमान लगा सकते हैं। जहां भी आर्य वीर दल है वहां आर्य समाजें जीवित हैं जहां नहीं है वहां मृत प्रायः है इसमें आपको बुरा मानने की बात नहीं सुधार करने की आवश्यकता है। आज गुरूवर महर्षि दयानन्द जी के स्वप्न को साकार करने के लिए अपना-अपना स्वार्थ छोड़ना होगा। अपना अहंकार छोड़ना होगा। अपने जीवन को अधिकार के कार्य को पूरा करने के लिए सुधारना होगा। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य हैं अर्थातृ शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इस छठें नियम के आधार पर सम्भवतः या अभी सोचने का अवसर नहीं मिला है संसार कितना बड़ा है कितनी बड़ी जिम्मेदारी है, कितना बड़ा काम हैं, कितने साधनों की आवश्यकता है उसके लिए कितना कार्य हम कर रहे हैं। कितनी सफलता प्राप्त कर चुके हैं कभी सोचने का अवसर यदि मिला होता तो फिर आज हम इतनी बुरी स्थिति में न आते और इसका विभाजन भी न होता?

बंटते बंटते इतना बट गये कि बिल्कुल बंटाधार हुआ। मुझे स्मरण आ रहा है मैंने एक दिन बचपन में एक दृश्य देखा था जो आज सच लग रहा है। हमारे ग्राम में एक परिवर में चार भाई थे सबसे बड़े का विवाह हो गया शेष तीन ऐसे ही रहे कुछ दिनों के बाद विभाजन हुआ तो तीनों एक साथ रहने लगे। खेती कार्य था भोजन बनाकर खा लेते एक भाई दुकान करता था। तीनों का सम्मिलित हुक्का था खर्च दुकानदार को करना पड़ता था। तीनों आकर पीते थे और बड़े प्यार से कार्य चल रहा था।

एक दिन मैं कुछ सामान लेने दुकान पर गया तो अचानक किसी बात पर तीनों में लड़ाई हो गई। तो दुकानदार ने ऊपर की चिलम उतारकर रख ली एक बीच का भाग लेकर चल दिया और तीसरे ने नीचे का पीतल का भाग उठाकर रख लिया और वहां से चल दिये। मैंने एक से पूछा - दादाजी अब क्या करोगे तो वे बोले मेरे बिना इनका कार्य नहीं चलेगा। दूसरा बोला कि मेरे बिना भी तेरा काम नहीं चलेगा तीसरा कहता मेरे पास तो चिलम है बिना हुक्के के पी लूंगा। तुम अपनी सोचो- आखिरकार फिर अगले दिन तीनों को समझौता करना ही पड़ा और अन्त तक बड़े प्यार से रहे- यही स्थिति आज आर्य समाज और सार्वदेशिक सभा की हो रही है जितना हिस्सा जिसे मिल जाये उसी में प्रसन्न है हमारी सभा असली दूसरे कहते है हमारी सभा असली, तीसरे कहते हैं हमारी सभा असली हैं मैं कहता हूँ कि तीनों ही अधूरे हैं किसी पर उपर उपर की चिलम है तो किसी पर नीचे का पानी भरा हुक्का और बीच वाले को तो मात्र नली पर ही संतोष करना पड़ रहा है ऐसे में कैसे बात बनें, चिन्तन करना होगा। आर्य वीर दल आपका पुत्र होने के नाते अपील करना चाहता है कि संगठन सूक्त का पाठ करने वालों उसके अर्थ पर भी कभी विचार कर लो आज स्थिति बड़ी भयंकर है आर्य समाज पर चारो तरफ से आक्रमण हो रहे हैं आर्य समाज के विषय में एन.सी.आर.टी. वाले जो पाठ्य पुस्तकों में लिख रहे हैं उनका कथन सत्य हो जायेगा। महाभारत का प्रकरण याद करो जो युधिष्ठिर जी ने समझाते हुए कहा था-

परस्परं विवादे तु वयं पंच शतं च ते। अन्यैसह विवादे तु वयं पंच शतोत्तरम्।।

लेकिन उस दिशा में कोई तैयारी आज दिखाई नही दे रही हैं। प्रत्येक अधिकारी अपनी अपनी अहं मन्यता को प्रभावित करने के लिए कोर्ट कचहरी जाकर अपनी पुरानी मान्यता को समाप्त कर रहा है। जहां हमें किसी अन्य गवाही की आवश्यकता नहीं थी आज वहां हमारी गवाही तो क्या हमें औरों से गवाही लेनी पड़ रही है। इसका मात्र एक ही उपाय है आर्य वीर दल को सुदृढ़ बनाओ, आर्य वीर दल के माध्यम से बच्चों में आर्यत्व के संस्कार बनेंगे और वे आर्य बनकर जब आर्य समाज में आवेंगे तो फिर कोई भी किसी भी प्रकार का विवाद नहीं हो सकता। अपने इतिहास से जो शिक्षा ली जाती है वह प्रेरणाप्रद होती है हमारा इतिहास हमारा अतीत गौरवशाली हे उस गरिमा की रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य हैं। अपने पूर्वजों का सम्मान इसी में सुरक्षित है अतः सभी आर्यो एवं आर्य समाज के अधिकारियों तथा आर्य वीर दल के अधिकारियों से विनम्र निवेदन करना चाहूँगा कि अपने अपने स्तर से जितना भी प्रयास अपने अपने क्षेत्र में आप कर सकें यह हमारा सौभाग्य होगा। हमारा चिन्तन, हमारा मनन और हमारा मुख्य उद्देश्य संसार के उपकार करने का है। समाज सेवा का है समाज की सेवा के लिए अच्छे स्वास्थ्य के लिए जो भी प्रयास आप करेंगे वहीं हमारे जीवन की सार्थकता सिद्ध करेगा। आपको आर्य समाज की प्रकृति के लिए आर्य वीर दल को प्रोत्साहित करते हुए इसकी शाखा से शिविर से सम्मेलन से जैसे भी सहयोगी बन सकें उसी के प्रयास के लिए हमारा पुरूषार्थ होना चाहिए। आशा है आप का सद्प्रयास हमारा सम्बल बनकर हमारा मनोबल बढ़ायेगा।

धरोहर.....

सज्जनता एवं विद्वता की प्रतिमूर्ति ओंकार मिश्र प्रणव शास्त्री

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

गुरूकुल महाविद्यालय सिरसागंज, मैनपुरी में वर्ष १९७२ में शास्त्री कक्षा में प्रवेश हेतु जब गुरूकुल गया तो मुझे अच्छी तरह से स्मरण आता है कि भाई हर्षवर्धन जी शास्त्री, बड़ी ही विनम्र हंसमुख स्वभाव के छात्र थे। हमारी मित्र मण्डली में उनका स्थान महत्वपूर्ण था उनसे मिलने के लिए फिरोजाबाद से प्रणव जी शास्त्री आते थे तो बड़े ही स्नेहिल भाव से मिलते कुशलता पूछते और हमें मेरठ मण्डली को देखकर मानों बहुत ही प्रसन्न होते थे। उनका कद सामान्य, सादगीपूर्ण वेशभूषा, चश्मा लगाये नेता श्री सुभाष चन्द्र बोस की तरह वाणी में माधुर्य लिए सहज भाव से ही मनमोहक आभा से प्रभावित प्रथम परिचय में ही प्रभावित करते थे। उनकी कविताएं आद्याक्षरी होती थी शिवा वावनी उनकी पुस्तक बड़ी प्रसिद्ध हुई उसके मुक्तक एवं कविताएं हम याद किया करते थे। श्री कुसुमाकर जी भी उनके बड़े साथियों में थे लेकिन वे हिंदी के अद्वितीय विद्वान थे। स्वनाम धन्य पूज्यपाद गुरूदेव महात्मा देवस्वामी जी महाराज ने अवकाश प्राप्त होने पर उन्हें गुरूकुल में ही हिन्दी के विशेष पाठ्यक्रम के लिए बुलाया था और हम उनसे लगभग २ मास तक पढ़ते रहे। आपने (प्रणव शास्त्री) बताया कि श्री मिश्र जी जैसा सरल एवं योग्य विद्वान इस क्षेत्र में नहीं है। जब वे गुरूकुल आते तो हम उनका प्रवचन सुनने के लिए बैठ जाते थे और वे बड़े सरल सहज भाव से जैसे पाठ पढ़ाते हैं मंत्रों की भी व्याख्या करते थे। ईशावारस्य मिदं सर्वम्.... इस मंत्र की व्याख्या प्रायः विद्वानों से सुनते आये हैं लेकिन आपकी की गई व्याख्या में इतना मन लगता था कि बस सुनते रहें आप कहते थे कि तेन त्यक्तेन भुंजीथा को आप अपनी यात्रा की तरह समझ लो उदाहरण के लिए आप आगरा से दिल्ली जा रहे हैं रास्तें में कोई आपको सीट से उठाना चाहे तो उठ नहीं सकते लड़ेंगे और अपना पूर्ण अधिकार मानकर उसकी सुरक्षा करेंगे लेकिन अपने गन्तव्य पर जाने से कुछ देर पहले ही मन बना लेते हैं कि सीट छोड़नी हैं और बस स्टाप से पूर्व ही खड़े हो जाते हैं कोई ममत्व नहीं रहता। इसी प्रकार जो संसार में रहकर परिवार एवं अपने बच्चों के प्रति मोह से विरक्त होकर जीता है उसे दुख नहीं होता। यह जीवन जीने की पद्धति है और हमारे लिए एक सुन्दर उपदेश भी है। हर्ष जी शास्त्री कक्षा उत्तीर्ण करके चले गए लेकिन उनकी बराबर याद आती रहती कितने अच्छे हैं हमारे मित्रवर जिनके पिताश्री इतने विद्वान है हमारे पिताजी तो बिल्कुल पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन गुने हुए थे वे भी एक बार जब गुरूकुल में मिलने गए थे तो बड़े बच्चों को बैठाकर ब्रह्मचर्य का उपदेश दिया था वे कहते थे कि शक्ति पैदा करके उसकी सुरक्षा करना भी सीखों एक हमारे साथी मित्रवर थे रवीन्द्र रवि आत्रेय उनके पिता भी अच्छे वैद्य एवं विद्वान थे वे भी अंत में गुरूकुल में ही रहे और मुझे उनकी सेवा करने का सौभाग्य मिला परंतु जो योग्यता, विद्वता, सरलता हमारे माननीय ओंकार मिश्र जी प्रणव शास्त्री जी में थी वह वास्तव में प्रेरणाप्रद एवं जीवनादर्श तपस्या का ही सुपरिणाम थी। उसके बाद वे हमारे गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर एवं आर्य समाज हापुड़ में भी बुलवाये गये जब वे प्रथम सम्मेलन में आते तो लोग समझते थे कि ये क्या बोलेंगे लेकिन उनकी वाणी पर सरस्वती विराजमान थी उनकी मधुर वाणी से मंत्रों की ध्वनि ओजस्वी बनकर प्रभावकारी होती थी। उनके बारे में जब पत्रिका में पढ़ा कि उनकी स्मारिका भाई हर्षवर्धन जी शास्त्री निकाल रहे हैं तो मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई और मैं ३०-३२ वर्ष पहले की जीवन की पुरानी स्मृतियों में खो गया। भाई हर्ष जी को सच्चे अर्थो में श्राद्ध करने की बात बाद में आई पर चलो जब आंख खुले तभी सवेरा समझकर महत्वपूर्ण कार्य किया है कि उनकी स्मृतियों की धरोहर को जो भी पढेगा प्रेरणा प्राप्त कर पुण्य प्रभा से प्रभावित हो प्रफुल्लमना पापकर्म से बचेगा और जीवन की ज्योति से जगमगा कर जीवन सरल करेगा। उनकी पुस्तकें, लेख संग्रहीत हो तो वे भी यथास्थान दिये जावें मुझे उनसे जो प्रेरणा मिली है उसे श्रद्धापुष्पांजलि के रूप में प्रस्तुत करने के लिए मैं अपने हृदय के भावों को पुष्प बनाकर प्रेषित कर रहा हूँ। परमात्मा करे ऐसे विद्वान हमारे परिवारों में बार बार आते रहें और भाई हर्ष जी शास्त्री जैसे सौभाग्यशाली पुत्र समाज को देते रहें तो ये भी उनका अनुकरण करके सच्चे अनुव्रती बनें और उनका ऋण उतारकर जीवन धन्य बनावें। मैं अपने गुरूकुल परिवार की ओर से आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश की ओर से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

सचालक- गुरूकुल पूठ

उपदेश करने का अधिकारी

-प्रताप कुमार साधक

यश्चिकेत स सुक्रतुर्देवत्रा स ब्रवीतु नः।
वरूणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः।।

वक्ता कई प्रकार के होते हैं। कुछ नियमित रूप से छात्रों को विषय समझाने के लिए बोलते हैं, उन्हें प्रवक्ता कहते हैं। अन्य वक्ता नैमित्तिक होते हैं, जो विशेष अवसरों पर श्रोताओं को सम्बोधित करते हैं। इनमें प्रमुख दो श्रेणियां हैं- १. राजनैतिक वक्ता जिन्हें नेता जी कहा जाता है और २. धार्मिक वक्ता जो गुरू, आचार्य, संत या उपदेशक कहे जाते हैं। धार्मिक वक्तृता को प्रायः उपदेश या प्रवचन कहा जाता है, जबकि राजनैतिक उद्‌बोधन को भाषण कहते हैं। किसी विषय पर पक्ष या विपक्ष में अपने विचार रखने के लिए भाषण प्रतियोगिता या वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाता है।

धार्मिक प्रवचन कर्ता, उपदेशक के अतिरिक्त अन्य वक्ताओं के लिए कोई आचार संहिता नहीं है। उनका व्यक्तिगत चरित्र कैसा भी हो, यदि वे अपने विषय को प्रभावी ढंग से श्रोताओं के सम्मुख रखते हैं तो तालियां प्राप्त कर सकते हैं, किंतु उपदेशकों के साथ ऐसा नहीं है, क्योंकि उनके प्रवचनों से श्रोताओं के जीवन सुधारने की अपेक्षा की जाती है। उनका उपदेश पूरे जीवन के लिए अनुकरणीय होना चाहिए। ऐसे उपदेशक श्रद्धा के पात्र होते हैं, अतः उनका स्वयं का जीवन आदर्श हो- ऐसी अपेक्षा की जाती है। उपरोक्त वेद मंत्र में वे गुण बतलाए गए हैं। वे गुण निम्न हैं:-

१. यश्चिकेत- जिसे विषय का स्पष्ट ज्ञान हो। किसी विषय पर बोलने के पूर्व उस पर विस्तार से स्वाध्याय, चिन्तन, मनन करके स्वयं स्पष्ट हो जाना अत्यावश्यक है। ऐसा होने पर ही उस पर अधिकारपूर्वक अपने विचार रखना और उससे संबंधित शंकाओं का समाधान करना संभव होगा। केवल कही से सुनकर या पढ़कर उन्हीं बातों को अपने शब्दों में कह देना प्रभावी नहीं होता। भाषण कला प्रवीण व्यक्ति कुछ भी जोरदार ढंग से बोल कर तालियां तो बटोर सकते हैं, किंतु किसी का हृदय परिवर्तन नहीं कर सकते, विचार बदल नही सकते।

२. सुक्रतु- उपदेश के अनुसार आचरण करने वाला हो। कर्मशील होने से मनुष्य को वेद में 'क्रतु' कहा गया है। 'सुक्रतु' का अर्थ उत्तम कर्म करने वाला है। उपदेशक अपने प्रवचन में जिस बात की शिक्षा दे रहा हो, यदि वह स्वयं वैसा आचरण नहीं कर रहा है तो श्रोता उस शिक्षा को अनुकरणीय क्यों कर स्वीकार करेंगे?एक बीमार रहने वाला उपदेशक स्वस्थ रहने के उपाय बताएं, स्वयं काली कमाई करने वाला ईमानदारी गा गुण गान करे अथवा सामाजिक या पारिवारिक सम्पत्ति पर अवैध कब्जा जमाए बैठा व्यक्ति 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृध कस्यस्विद्धनम्' का उपदेश दे तो उसकी कोरी बातों का श्रोताओं पर भला क्या सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा?जनता तो विद्वान उपदेशक, सन्यासियों को बड़े ही आदर भाव से आदर्श रूप में देखती है। वे उन्हें अपने से उच्च स्तर का मानती है। अतः यदि वे अपने आदरणीय को सामान्य व्यक्ति के समान ही दोषों से लिप्त पाएँगे तो उनकी श्रद्धा तिरोहित हो जाएगी और तब ऐसे उपदेशक के प्रवचनों का कोई प्रभाव न होगा। इसीलिए कहा जाता है कि उपदेशक के शब्द नहीं, अपितु उसका जीवन बोलता है। क्या कारण है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रवचनों को सुनकर जन्म से मूर्तिपूजा करने वाले अपनी मूर्तियों को नदी में प्रवाहित करके उनके अनुयायी बन जाते थे, जबकि आजकल अनेकों विद्वान उपदेशकों के होते हुए भी वैसा प्रभाव नहीं पड़ रहा है। कारण स्पष्ट है कि 'एक जलता हुए दीपक असंख्य दीपों को प्रज्वलित कर सकता है, जबकि कई बुझे हुए दीपक मिलकर भी एक दिया नहीं जला सकते। अतः उपदेशक को उसी विषय पर प्रवचन देना चाहिए जिस पर मनसा, वाचा, कर्मणा अधिकार प्राप्त कर लिया हो।

३. वरूणो यस्य दर्शतः- वरणीय प्रभु ही जिसका आदर्श है। जिसका चरम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति करना और कराना है। उपदेश का उद्‌देश्य धन या प्रशंसा की प्राप्ति अर्थात् वितैषणा या लोकैषणा नहीं होना चाहिए। श्रोताओं के अज्ञान, अविद्या को दूर करके सत्य मार्ग बतलाना ही उपदेशक का प्रमुख कर्तव्य होता है। इसके लिए यदि उसे विरोध या कठिनाईयों का सामना करना पड़ें तो भी पीछे नहीं हटना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऐसा करने के लिए बहुत विरोध सहा, कई बार उन पर प्राणघातक हमले हुए और अंत में उन्हें विष देकर जीवन लीला समाप्त भी कर दीं, किन्तु वह अपने उपकारी कार्य से पीछे न हटे। ईश्वर सब जीवों की भलाई चाहता है। उसी प्रकार ऋषिवर ने भी सब मनुष्यों की भलाई के लिए उनके अज्ञान को मिटाकर धर्म के सत्य स्वरूप को प्रस्तुत किया। सत्यार्थ प्रकाश (उत्तरार्द्ध की अनुभूमिका) में उन्होंने अपना मन्तव्य स्पष्ट कर दिया है- ''मेरा तात्पर्य किसी की हानि व विरोध करने में

शेष पेज ७ पर देखें....

योगेश्वर श्री कृष्ण जन्म दिवस पर्व और शिक्षक दिवस

-मनमोहन कुमार आर्य

भारतीय धर्म व संस्कृति के गौरव योगेश्वर श्री कृष्ण का आज जन्म दिवस है। हमें और हमारे देश को इस बात का गौरव है कि योगेश्वर श्री कृष्ण, मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम और वेद, वैदिक धर्म और संस्कृति के पुनरूद्धारक महर्षि दयानन्द आदि अनेक महापुरूषों के समान विश्व में ऐसे गौरवमय जीवन उत्पन्न नहीं हुए। श्री कृष्ण आदि सभी ऋषि, मुनि व महान युगपुरूष वैदिक धर्म व संस्कृति की ही देन थे। इसीलिए आद्य धर्मशास्त्र के निर्माता मनु ने लिखा था कि आर्यावर्त की पुण्य भूमि संसार के अग्रजन्मा महापुरूषों की जन्मदात्री है जहां संसार के लोग उत्कृष्ट जीवन व चरित्र की शिक्षा लेने आते हैं। हमें श्री कृष्ण, मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम और महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्रों का अध्ययन करने पर इनमें ज्ञान व चिन्तन अथवा विचारधारा में कहीं कोई विरोधाभास दृष्टिगोचर नहीं होता अभी यह सभी वेदों के अनुयायी व प्रचारक ही प्रतीत होते हैं। वेदों में ही यह शक्ति, क्षमता व सामर्थ्य है कि वेदों का अध्ययन कर मनुष्य ऋषि, मुनि, ब्रह्मचारी, देशभक्त, ईश्वरभक्त, मातृ-पितृ-आचार्य भक्त, मर्यादित-आदर्श जीवन व चरित्र का धनी, परोपकारी, सेवाभावी, सदुपदेशक, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से ओत प्रोत, अहिंसक, अस्तेयसेवी वा भ्रष्टाचार मुक्त, शुद्ध मन-वचन-कर्म का सेवनहारा बनता है। वेदों में वेद को ही ''सा संस्कृति प्रथमा भाविवारा'' कह कर इसका गौरवगान किया है जो कि ऐतिहासिक दृष्टि से पुष्ट व सत्य है। इन उच्च आदर्शो व गुणों से सम्पन्न हमारी संस्कृति है व हमारे महापुरूष इसके संवाहक रहे हैं। दूसरी ओर हमारे कुछ अल्पज्ञानी लोगों ने अपने अज्ञान व कुछ स्वार्थ वश श्री कृष्ण जी के चरित्र को दूषित करने का भी प्रयास किया है। गोपियों व उद्धव आदि के जो प्रसंग लिख कर उनका प्रचार किया जाता है, वह सब प्रक्षेप व कुछ अंधभक्ति के भावों से भरे हुए लोगो की कल्पना ही कही जा सकती है। इसके विपरीत श्री कृष्ण जी तो सच्चे ब्रह्मचारी, योगेश्वर तथा राजनीति व राजधर्म के मर्मज्ञ अग्रणीय महापुरूष थे। वह मातृशक्ति का ऐसा ही सम्मान करते थे जैसा कि वेदों में वर्णित है। वह नारी जाति व मातृशक्ति के पुजारी थे क्योंकि उन्होंने मनु के ये वाक्य पढ़े थे कि जहां नारियों का सम्मान व पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं और जहां चोर व जार कर्म होता है वहां कि सभी क्रियायें व्यर्थ प प्रतिगामी होने से देश व समाज को अधोगति में ले जाती है। महाभारत के कृष्ण वीर, बलशाली, बुद्धिमान, नीतिज्ञ, सुदर्शन चक्र धारी, दुष्टभंजक, साधुओं के रक्षक आदि गुणों से परिपूर्ण थे।

हम यहां श्री कृष्ण के वैदिक धर्म के प्रति अनुराग का एक उदाहरण भी प्रस्तुत करना चाहते हैं। महाभारत में शांति पर्व में महर्षि वेद व्यास ने लिखा है- श्री कृष्ण भीष्म से उपदेश ग्रहण करने के दिन युधिष्ठर की राजधानी में सुखपूर्वक निद्रा लेने के पीछे, पहर रात्रि रहने पर जागे तथा प्रातः स्मरणीय मंत्रों से सनातन ब्रह्म का ध्यान कर उन्होंने स्नान किया। फिर प्रणव गायत्री का जाप एवं संध्या कर नित्य किया जाने वाला होम किया। इन पंक्तियों में महर्षि व्यास ने श्री कृष्ण जी के प्रातः काल की दिनचर्या पर प्रकाश डाला है। श्री कृष्ण जी हमारे पूर्वज हैं अतः हमें भी उनके इन गुणों को ग्रहण का धारण करना चाहिए। यही संकल्प इस कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर हम कृष्ण भक्तों को लेना चाहिए। हम इस अवसर पर महर्षि दयानन्द के उन विचारों को भी स्मरण करना चाहते है जिसमें उन्होंने कहा है कि श्री कृष्ण जी का महाभारत ग्रंथ में इतिहास अति उत्तम है। उनके गुण, कर्म व स्वभाव आप्त पुरूषों अर्थात् वेद के ऋषियों के समान थे। उन्होंने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कोई बुरा काम नहीं किया। इसके अतिरिक्त मूर्ति पूजा के प्रसंग में सत्यार्थ प्रकार के ग्यारहवें समुल्लास में वह लिखते हैं कि ''संवत् १६१४ के वर्ष में तोपों के मारे मंदिर की मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थी, तब मूर्ति कहां गयी थी?प्रत्युत् बाघेर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े, शत्रुओं को मारा, परंतु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्री कृष्ण सदृश कोई होता तो इनके घुर्रे उड़ा देता और ये लोग भागते फिरते। भला यह तो कहो कि जिसका रक्षक मार खाय, उसके शरणागत क्यों न पीटे जाय।

आज शिक्षक दिवस भी है। शिक्षक आचार्य को कहा जाता है। वैदिक धर्म व संस्कृति में आचार्य को माता पिता के समान ही सम्मान दिया जाता रहा है। माता संतान को केवल जन्म देती है परंतु उसे द्विज अर्थात् ज्ञान व विद्या से सम्पन्न कर नया जन्म देने वाला आचार्य ही होता है। आज न तो अच्छे आचार्य हैं और न ही राम, कृष्ण, चाणक्य व दयानन्द जी जैसे शिष्य। गुरू का माता पिता के समान आदर, ब्रह्मचर्य का सेवन, सत्य धर्म व अन्य विषयों के शास्त्रों व पुस्तकों का अध्ययन करने वाले छात्र आज देश में बहुत ही कम होंगे?हम जानते हैं कि श्री राम का निर्माण उनके गुरू विश्वामित्र और वशिष्ठ आदि ने किया था। इसी प्रकार श्री कृष्ण जी का निर्माण उनके गुरू संदीपनी जी ने किया था। महर्षि दयानन्द का निर्माण यद्यपि अनेक गुरूओं ने किया। महर्षि दयानन्द का शिष्यत्व इतिहास प्रसिद्ध शिष्यों में अपूर्व हैं। बच्चे लगभग पांच से आठवें वर्ष में आचार्यकुल व विद्यालय में प्रवेश लेते हैं। महर्षि दयानन्द के माता पिता ने इसी वय में उनका अध्ययन आरम्भ कराया। इक्कीस वर्ष पूर्ण होने तक उन्होंने अपने माता पिता के द्वारा योग्य गुरूओं से अध्ययन किया। बाईसवें वर्ष में उन्होंने और अध्ययन के लिए गृह त्याग किया अन्यथा माता पिता उन्हें विवाह बंधन में बांध देते और फिर वह जो बनना चाहते थे वह बने, वह कदापि नहीं बन सकते थे। गृह त्याग के बाईसवें वर्ष से लेकर अपनी आयु के ३८वर्ष पूर्व करने पर भी वह अध्ययनरत रहे। उनके गुरू के साथ कैसे सम्बन्ध थे वह इन दोनों गुरू शिष्य के जीवन चरित पढ़कर ही जाना जा सकता है। इतना कह सकते हैं कि यह आदर्श व अपूर्व थे। इस बीच उन्होंने न केवल योग का पूर्ण अभ्यास कर समाधि अवस्था में ईश्वर का साक्षात्कार किया अपितु वेद सहित सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञान भी प्राप्त किया। उनके शास्त्र ज्ञान के दाता और उसे पूर्णता देने वाले गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती मथुरा थे। जिन लोगों ने स्वामी दयानन्द व स्वामी विरजानन्द जी के जीवन चरित्र का गंभीरता से अध्ययन किया है वह जान सकते हैं कि विगत लगभग ५,२०० वर्षो में इन दो गुरू शिष्यों के समान अन्य कोई गुरू-शिष्य उत्पन्न नहीं हुआ। इनसे जितना देशोपकार हुआ है उतना किसी अन्य गुरू-शिष्य के द्वारा नहीं हुआ। वेदों का उद्धार ता एकमात्र महर्षि दयानन्द की ही देन है जिसमें उनके गुरू व आचार्य स्वामी विरजानन्द जी का विद्यादान अदृश्य रूप से छिपा हुआ है। स्वामी दयानन्द ने महाभारत काल के बाद आलसी व प्रमादी वैदिक धर्म के अनुयायियों द्वारा विकृत धर्म व संस्कृति को पूर्ण शुद्ध रूप प्रदान किया और इसे संसार का पूर्ण व एकमात्र तर्क व युक्तियों पर आधारित प्राचीनतम ईश्वर प्रदत्त विज्ञान सम्मत धर्म सिद्ध किया। यथा गुरू तथा शिष्य की कहावत के अनुसार ही शिष्य अपने गुरू के ज्ञान व आचरण के अनुरूप होता है। आज आवश्यकता है कि हमारे शिक्षक, आचार्य व गुरू आदर्श जीवन व चरित्र के धनी बनें और अपने शिष्यों को भी वैसा ही बनायें। शिक्षित व साक्षर, इंजीनियर व डाक्टर अथवा कम्प्यूटर विज्ञान में प्रवीण शिष्य व युवा तैयार करना अच्छी बांत हैं परंतु यदि कोई शिक्षा ग्रहण करने के बाद स्वार्थी, अर्थलोलुप या लोभी बनता है और भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार व देशद्रोह के कार्य करता है तो उसे पूर्ण शिक्षित नहीं कहा जा सकता। आज देश को स्वामी विरजानन्द व स्वामी दयानन्द जैसे गुरू व शिष्यों की आवश्यकता है। इसी से देश का निर्माण होकर हम अपने प्राचीन यश व गौरव को प्राप्त कर सकते हैं।

आज शिक्षक दिवस पर हम सभी शिक्षकों व शिष्यों को शुभकामनायें और बधाई देते हैं और उनसे आग्रह करते हैं कि वह प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन कर आदर्श शिक्षक एवं शिष्य बनाने का व्रत लें।

१६६, चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१
मो.- ०६४१२६८५१२१

आर्य वीर दल कैमथल अलीगढ़ फर्जी संस्था

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज मंदिर अचलताल अलीगढ़ में दिनांक १२-१०-२०१५ को आयोजित प्रेस वार्ता में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा कि माननीय उच्च न्यायालय द्वारा घोषित सर्वमान्य आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने आर्यवीर दल उ.प्र. के प्रादेशिक पदाधिकारियों में श्री महेश योगी (अधिष्ठाता) आचार्य धर्मवीर शास्त्री (महामंत्री) श्री ऋषिपाल वर्मा एडवोकेट (संचालक) तथा जनपद अलीगढ़ में श्री पूरनमल शास्त्री (अधिष्ठाता) डा. खुशपाल आर्य (संचालक) श्री सोनपाल आर्य (कोषाध्यक्ष) तथा श्री वेदपाल सिंह आर्य (महानगर संचालक) घोषित किया है।

अन्य कोई भी व्यक्ति या संस्था आर्य वीर दल के कार्यक्रमों को संचालित करने के लिए अधिकृत नहीं है जैसा कि ज्ञात हुआ है कि ''आर्य वीर दल कैमथल'' नामक फर्जी संस्था व उससे संबंधित व्यक्ति जो फर्जी तरीके से कार्य कर रहे हैं यह अवैध व अनाधिकृत हैं। उसके विरूद्ध वैधानिक व प्रशासनिक कार्यवाही की जा रही है।

स्त्री पुरूष के समान या महान

प्रतिभा भारद्वाज वसिष्ठ

वैसे तो मैं शान्त ही थी किंतु जब मैंने साप्ताहिक आर्यमित्र दिनांक १५ सितम्बर २०१५ में आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा की क्षोभ भावना ''आर्यो का तुष्टीकरण दयानन्द की हार'' से अवगत हुई तब ये पंक्तियां मेरे मन मस्तिष्क से प्रस्फुटित होने लगीं। अपने विद्याध्ययन काल में वाराणसी के समारोह में किसी विदुषी देवी ने वेद पाठ प्रारम्भ किया था, तब वहां उपस्थित किन्हीं शंकराचार्य जी ने उस देवी को मंच से हटा दिया था। इस घटना का आर्य समाज तथा आर्य देवियों द्वारा इतना विरोध हुआ था कि तथाकथित शंकराचार्य जी को बगलें झांकने पर विवश होना पड़ा था। इस प्रकरण से ''स्त्री शूद्रोनाधीयताम्'' के कलुष पर ''यथेमां वाचं कल्याणीभावदानी जनेभ्यः (यजु.२७.२) का कमल खिल गया था। आर्य समाज के इस सूर्योदय पर उसकी किरणें ही ग्रहण लगाने को आतुर हो उठें तो उसके मोक्ष के लिए आर्य नारियों को ही उद्यत होना पड़ेगा। कन्याओं के गुरूकुलों के द्वारा ऐसी वीरांगनाओं के निर्माण का क्रम जारी है। इतना ही नहीं भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के उच्च स्तर पर तथा आरक्षी रक्षक दलों में भी महिलाओं का अवदान अब प्रशंसनीय स्तर पर पहुँच चुका है। शिक्षा एवं प्रशासन तथा राष्ट्र नेत्री के पदों पर तो वह पहले से ही अपनी धाक जमाये हुए हैं।

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार परिसर में गुरूकुल के प्राच्य विद्या संकाय एवं महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन (म.प्र.) के संयुक्त तत्वावधान में १३-१५ मार्च २०१५ तक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई। इसके समापन समारोह में पहले तो विदुषी देवियों को स्थान निर्धारित करके बैठाया गया फिर स्वामी नारायण मत के साधु भद्रेश जी के संकेत पर उन्हें उस स्थान से उठाकर पीछे बैठने को बाध्य किया गया। वहां उपस्थित आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा ने आर्य सिद्धान्त विरूद्ध इस कृत्य का विरोध किया और उनके द्वारा प्रदत्त सम्मान को स्वीकार करने से भी मना कर दिया।

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा का निर्णय निश्चित ही स्वागत योग्य है, पर उन्होंने अपने इस लेख में विस्तारपूर्वक मंत्र संदर्भ देते हुए स्त्री एवं पुमान् को समान बताया है ऐसा उन्होंने संकोचवश ही किया होगा अन्यथा स्त्री पुरूष के समान नहीं उससे अधिक महान है। यदि केवल शारीरिक बल को ही मान्यता दी जाती है तो पुरूषों से अधिक शक्तिशाली अनेकशः पशु होते हैं। पुरूष अपनी मेघा के बल पर उन पशुओं को वश में कर लेता है। बुद्धि, मेघा, प्रज्ञा, प्रतिभा आदि सभी स्त्रीवाची शब्द हैं, इन्हीं के सहयोग से वह जीवन में उच्च से उच्च उपलब्धियां प्राप्त करता है। वैसे भी नारी नर से भारी है, क्योंकि ''आ और ई'' की सामर्थ्य उसी के पास है। वह महिला (महा+इला) बड़ी वन्दनीय होने के कारण हैं। 'स्त्री' शब्द का सार इस प्रकार समझते हैं- १. महातत्व २. इसके गुण ३. इन्द्रियां इन तीनों को समान स्तर पर लाने वाली शक्ति को स्त्री कहते हैं। उदाहरणतः अग्नि उसका प्रमुख गुण रूप, नेत्र, ज्ञानेन्द्रिय तीनों समान स्तर पर आ जाते हैं, तब कोई वस्तु दिखाई देती है। यही देखने वाली शक्ति अर्थात् नेत्र की शक्ति स्त्री है। नेत्र के गोलक तो हैं किंतु दिखाई नहीं देता, तो वे अपनी स्त्री शक्ति से शून्य है। इसी प्रकार नारी के लिए उपयोग किये जाने वाले अनेक शब्दों की उपयोगिता समझ लेनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नर से नारी को अधिक समझते हुए ही उस दिन लोगों की शंका का समाधान किया था जब वे मार्ग में पड़ने वाले मंदिर के सामने सर झुका कर जा रहे थे। लोगों ने प्रश्न किया था कि वैसे तो आप मूर्ति पूजा का खण्डन करते हो और मंदिर पड़ता है तो सर झुका लेते हो?उन्होंने उत्तर दिया था- यह आप लोगो को भ्रम है मैंने तो मंदिर के पास खेल रही कन्या मातृशक्ति को नमन किया है। स्वामी विवेकानन्द जी ने भी नारी की निन्दा करने वालों को चुनौती देते हुए कहा था कि तुम एक दिन कुछ किलो का वजन पेट पर बांधकर अपना दैनिक कार्य कर के दिखा सकते हो क्या?जबकि एक गर्भवती नारी ऐसा करती रहती है। इसीलिए वह जननी है, निर्माता है। माता, भगिनी, पत्नी एवं पुत्री के रूप में नारियों ने पुरूषों को महान बनाया है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने संसार को केवल इतनी ही अनुभूति नहीं करायी अपितु जिस एक वाक्य से वे विश्व वन्दनीय बने और वैदिक संस्कृति की ब्रह्माण्ड व्यापी धूम उन करतल ध्वनियों के द्वारा मचायी वह वाक्य यही तो था - बहनों और भाईयों अमरीकावासी जिसमें नारी को प्राथमिकता दी गयी थी। भारत के लिए यह साधारण बात थी क्योंकि यहां तो किसी भी दम्पति को सम्बोधन के समय श्रीमती एवं श्री गौरीशंकर, सीताराम आदि के द्वारा नारी को प्राथमिकता दी जाती है। यहां वर्ष में दो बार नवरात्रि जागरण के रूप में विभिन्न विभिन्न नामों से दैवीय शक्ति के लिए व्रत-उपासना अनुष्ठान होते हैं। इससे भी अधिक नारियां अपने पिता भ्राता पुत्र आदि के कल्याण के लिए न केवल भूखे रहकर उपवास ही करती हैं, प्रत्युत उन्हें संकल्प की शक्ति भी प्रदान करती है। वेद माता की पुत्री होने के नाते भारत की नारी घोषणा करती है-

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विचाचनी।
ममेदनु क्रतुंपतिः सेहानाया उपाचरेत्।। ऋ. १०.१५६.२।।

अर्थात् मैं ध्वजा तुल्य ज्ञान-घोषिका, सिर के तुल्य सम्मानीय, मैं तेजस्विनी विविध विषयों की वक्ता बनूं। शत्रु को जीतने वाले मेरे ही संकल्पानुकूल मेरे पति कर्तव्य करें।

अब पाठक जी आपका प्रश्न होना चाहिए कि फिर भारत में नारी की इतनी अधिक कारूणिक दशा क्यों हैं? इसके लिए मनु महाराज ने पहले ही बता दिया है:- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वस्तत्राऽफलाः क्रिया। अर्थात् जहां स्त्रियों का सत्कार होता है वहां देवता समान विद्यायुक्त संतान उत्पन्न होकर आनन्द होता है, जहां स्त्रियों पर अत्याचार होता है वहां सब क्रियाएं निष्फल हो जाती हैं। श्लोक की प्रथम पंक्ति की खूब चर्चा होती है, किंतु दूसरी पंक्ति मौन ही रह जाती है। भारत राष्ट्र में होने वाली योजनाओं का परिणाम आप देख ही रहे हैं, जो भी किया जाता है उसका फल प्राप्त नहीं हो पा रहा है। आर्य संस्था में देवियों ने सौम्यता की मर्यादा को बनाये रखा, जबकि केरल साहित्य अकादमी त्रिशूर में इसी सम्प्रदाय के संत की उपस्थिति में नारी अवमानना के कारण समारोह ही स्थगित हो गया।

सोचिये सुकुमारी सीता के हरण हेतु महाबली राक्षस रावण को यती का छद्म वेश क्यों धारण करना पड़ा। राक्षस कंस ने अपनी मृत्यु के भय से एक नवजात कन्या को पत्थर पर पटक कर मार दिया था- तब जो आकाशवाणी हुई थी वह आज भी प्रभावी है। जब गर्भ में कन्या भ्रूण को मार दिया जायेगा, दहेज दुष्कर्म के लिए उनकी हत्या होगी तो उनकी मौन चित्कार लौटकर देश में सर्वनाश का कारण बनें तो इसमें कोई अनहोनी नहीं हैं। मनु के श्लोक की पहली पंक्ति का ठीक पालन कर लीजिए- दूसरी पंक्ति स्वयंमेव हमारे अनकूल हो जायेगी।

यहां पर यह भाव इसलिए व्यक्त नहीं किए गये है कि स्त्री पुरूष में कोई ऊँच नीच, द्वेष-भाव या मतभेद हो इसका तो स्वयं वेद भगवान ही निषेध करते हैं। जिस सप्तपदी से वे दम्पति बनते हैं उसके सातवें पद पर सखा होते हैं अर्थात समान ख्याति वो यहां भी एक लालित्य है- सांसारिक व्यवहार में स्त्री वामांगी होती है और यश धर्म संस्कार में पुरूष वामांगा।

जिन मत मतान्तर व सम्प्रदायों का महर्षि दयानन्द सरस्वती ने खंडन किया है, उन्हीं के प्रतिनिधि आर्य समाज संस्था में आकर महर्षि के दिशा निर्देश की अवहेलना करें, ये असह्य होना चाहिए। हां, यदि वे हमारे साथ आकर वेद को ही नहीं, वेद के विशुद्ध आदेश को भी मानकर उसके शाश्वत सिद्धान्त को स्वीकारते हैं तो उनका स्वागत हैं।

शिक्षिका, उच्च प्राथमिक विद्यालय
एम.आई.जी.-फेस-१
रामघाट रोड,
अलीगढ़-२०२००१

आर्य समाज काशीपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज काशीपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक ३०-३१ अक्टूबर व १ नवम्बर को पंजाबी सभा माता मंदिर रोड, काशीपुर में धूमधाम से मनाया जायेगा। उत्सव में डा. विजय विद्यालंकार, डा. पवित्रा विद्यालंकार, डा. जयसिंह सरोज, आचार्य विश्वमित्र शास्त्री, पं. कुलदीप आर्य एवं भजन मण्डली, श्री जयप्रकाश भजनोपदेशक आदि के उपदेशों एवं भजनों को सुनने का सुयोग मिलेगा।

३० अक्टूबर को प्रातः ७ से ६ बजे तक भजन उपदेश ६ बजे ध्वाजारोहण दोपहर २ बजे से शोभायात्रा निकाली जायेगी। दिनांक ३१ अक्टूबर को प्रातः ७ से १० बजे तक यज्ञ भजन व प्रवचन सायं ४ बजे से महिला सम्मेलन रात्रि ७ से १० बजे तक भजन उपदेश तथा १ नवम्बर को प्रातः ७ से १० बजे तक यज्ञ भजन समापन सायं ६ बजे होगा।

-कृष्ण वर्मा चौहान
प्रधान

आर्य समाज भटौली, दातागंज, बदांयू का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज भटौली दातागंज बदांयू का ५६वां वार्षिकोत्सव दिनांक २६-२७ अक्टूबर को सुसम्पन्न हुआ। उत्सव में भानुप्रकाश शास्त्री, भजनोपदेशक बरेली एवं आचार्य संजीव रूप गुधनी, पं. उदयराज आर्य भजनोपदेशक बदांयू, डा. दयाराम आर्य वेदपथी बदांयू, चमनपाल भजनोपदेशक दातागंज आदि के भजन एवं उपदेश हुये जिसका श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

"पांच महायज्ञ पाँच कष्टों को काटने वाले होते हैं"

हमारे तपस्वी, त्यागी, विद्वान, ऋषि-मुनियों ने हर व्यक्ति का विशेष कर गृहस्थी को पाँच महायज्ञ नित्य सुचारू रूप से करने का आदेश दिया है। इन पाँच महायज्ञों से अनेकों लाभ तो है ही पर विशेष लाभ यह है कि ये पाँचों यज्ञ पाँच किस्म के दुखों व कष्टों को दूर करने वाले भी हैं। यदि इन यज्ञों से दुखों व कष्टों का निवारण होता है। वे पाँच महायज्ञ है- १. ब्रह्म यज्ञ २. देव यज्ञ ३. पितृ यज्ञ ४. बलिवैश्य देव यज्ञ ५. अतिथि यज्ञ। कष्ट हैं आत्मिक, शारीरिक, पारिवारिक, प्राकृतिक तथा अज्ञान से बढ़ती दूरियां। पाँच यज्ञों से पाँच कष्ट कैसे दूर होते हैं उनका संक्षिप्त परिचय यहां देते हैं-

१. ब्रह्म यज्ञ- ब्रह्म यज्ञ आत्मा के दुखों व कष्टों का निवारण करके आनन्द की अनुभूति करवाता है। ब्रह्म यज्ञ का तात्पर्य है सन्ध्योपासना करना तथा वेद आदि धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना। मनुष्य को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नित्य प्रातः व सायं करनी चाहिए। इससे आत्मा में आये विकार यानि ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, हिंसा आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और उनकी जगह प्रेम, दया, करूणा, परोपकार की भावना व आनन्द का संचार होता है। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना का तात्पर्य है कि हम किसी एक शान्त व स्वच्छ स्थान पर मन को सब ओर से हटाकर एकाग्र चित्त हो अपनी दृष्टि को बाहर से हटाकर अन्दर डालकर पहले तो हम ईश्वर की स्तुति यानी प्रशंसा करे कि हे ईश्वर! आप कितने सामर्थ्यवान हो और किस प्रकार सृष्टि की रचना करके उसका संचालन व संहार भी आप ही करते हो और जीवों को उनके किये अच्छे व बुरे कर्मो का फल भी आप ही अपनी न्याय व्यवस्था से किस प्रकार देते हो यह ध्यान देना चाहिए। फिर अपने पूर्ण सामर्थ्य के बाद जो काम नहीं बनता हो उसकी सफलता पाने के लिए और अधिक सामर्थ्य पाने की ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। फिर उसके पास बैठकर अपने अवगुणों व दोषों का ध्यान करना चाहिए और ईश्वर के गुणों का स्मरण करते हुए अपने दोषों को छोड़ना और ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य ब्रह्मयज्ञ से अपने दुर्गुणों को छोड़ता है और ईश्वर के गुण दया, करूणा व परोपकार की भावना से जुड़ता हुआ अपने जीवन को पवित्र बनाता है। ब्रह्म यज्ञ में सन्ध्योपासना के साथ साथ वेदों तथा धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना भी आता है जिससे मनुष्य अपने ज्ञान को बढ़ाता है और वेदों के अनुसार चलकर मोक्ष की तरफ अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, जिसको पाने के लिए जीव अच्छे कर्म करते हुए मनुष्य योनि में आता है।

२. देवयज्ञ- यह महायज्ञ मनुष्य के शरीर से सम्बन्ध रखता है। देवयज्ञ का तात्पर्य है हवन करके सब जड़ देवों को प्रसन्न करना होता है। विश्व में पाँच जड़ देवता है जिनके नाम हैं जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश। इन पांचों जड़ देवताओं का अग्नि मुख हैं। जिस प्रकार हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मुख से भोजन करते हैं और उस भोजन का पेट में जाकर रस, रक्त आदि बनकर पूरे शरीर में जाता है और पूरे शरीर की कमियों को पूरा करता है तब मनुष्य स्वस्थ रह पाता है। यही काम यज्ञ करता है। वह भी अग्नि में जो घृत, सामग्री व समिद्या आदि डाली जाती है उसकी सुगन्ध अग्नि में डालने से हजार गुणा बढ़ जाती है और वह सुगन्ध जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी व आकाश में फैल कर सबको सुगन्धित कर देती है जिससे सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र हो जाता है। ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है जो जीव के लिए लाभदायक है। हाईड्रोजन व नाईट्रोजन गैस कम हो जाती है जिससे मनुष्य का शरीर स्वस्थ्य रहता है यानि शरीर में जो रोग व बीमारियां रहती है वे दूर हो जाती है और शरीर स्वस्थ्य हो जाने से मनुष्य का जीवन सुखी व आनन्दित बन जाता है। इस प्रकार देव यज्ञ से शरीर के कष्ट दूर हो जाते हैं।

३. पितृयज्ञ - पितृ या से परिवार व गृहस्थ जीवन सुखी बनता है। जिस घर में पितर जनों का आदर व सम्मान होगा उनकी सभी आवश्यकतायें पूर्ण होंगी तो उनके आशीर्वाद और उनके अनुभवों का लाभ उस परिवार को मिलेगा जिससे वह परिवार भी सुखी बना रहेगा। हमारे पौराणिक भाई मरे हुओं का श्राद्ध व तर्पण करते हैं परंतु वेद हमें मरे हुए पितरों का श्राद्ध व तर्पण करना नहीं सिखाता बल्कि जीवित माता पिता व वृद्ध जनों की श्रद्धापूर्वक सेवा सुश्रूषा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न रखना सिखाता है। जिसको श्राद्ध कहते हैं। अपने स्वभाव व व्यवहार से बड़ों के मन को तृप्त रखना ही तर्पण कहलाता है जो जीवितों का ही कर पाना संभव है। मरने के बाद करना एक अंध विश्वास ही है।

४. बलिवैश्य देवयज्ञ- यह यज्ञ से सब जीवों को प्रसन्न रखना है। जो भूखा है उसको भोजन देना, जो प्यासा है उसको जल देना। जो असहाय है उसकी सहायता करना। जो जीव पर आश्रित है उसकी रक्षा करना ही बलि वैश्य देव यज्ञ है। इस यज्ञ में जीव हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जब सब जीव प्रसन्न रहेंगे जो प्रकृति भी शान्त रहेगी, उनमें किसी प्रकार का प्रकोप नहीं होगा और सब जगह शान्ति बनी रहेगी।

५. अतिथि यज्ञ - घरों में अज्ञानता से जो वैमनस्य बना रहता है, आपस में बैर भाव रहता है और परस्पर लड़ते झगड़ते रहते हैं अतिथि यज्ञ से सब समाप्त हो जाते हैं। अतिथि यज्ञ का तात्पर्य यह है कि गृहस्थियों के घर साधु, संत, सन्यासी, विद्वान, वानप्रस्थी व गुरूकुलों के आचार्यो व ब्रह्मचारियों का आना जाना बना रहना। जिस गृहस्थ में सन्यासी, वानप्रस्थी व विद्वानों का आदर सत्कार होगा उनका घरों में प्रवचन होंगे, उपदेश होंगे तो उस घर में परस्पर का विरोध व कटुता कभी भी नहीं रहेगी। कारण परस्पर का विरोध व कटुता अज्ञान से उत्पन्न होती है।जब सन्यासियों और विद्वानों के सद्उपदेश जिस घर में होंगे उस घर से अज्ञानता दूर हो जायेगी और परस्पर का प्रेम व सहृदयता का वातावरण बन जायेगा, तब पति पत्नी, सास बहु, भाई भाई का झगड़ा कभी नहीं होगा और वह घर परस्पर के शुद्ध व्यवहार से स्वर्ग के समान बन जायेगा। इस प्रकार इन पांच महायज्ञों से ऊपर लिखे इन पाँच दुखों व कष्टों की निवृत्ति होती है। इसलिए हर व्यक्ति को विशेषकर हर गृहस्थी को अपना जीवन व गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए ये पाँच महायज्ञ अवश्य करने चाहिए।

इस लेख के लिखने के भाव मेरे मन में तब जगे जब आर्य समाज बड़ा बाजार का वेद सप्ताह यानि श्रावणी उपाकर्म जो २३ से २६ अगस्त २०१५ तक मनाया गया था। उसी के प्रथम दिन प्रातः के सत्र में पूज्य आचार्य ब्रह्मदत्त जी का प्रवचन इसी विषय पर हुआ था। वह प्रवचन मुझे बहुत ही अच्छा लगा, इसलिए इसका लाभ अन्य विज्ञ जन भी उठा सकें, इस भावना से प्रेरित हो कर मैंने यह लेख लिखा है। आशा है इसका अधिक से अधिक लाभ पाठक गण उठायेंगे।

खुशहाल चन्द्र आर्य
द्वारा- गोविन्द राम आर्य एण्ड संस
१८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला)
मो.-६८३०१३५७६४

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक महोदय,

आर्यमित्र ०६ अक्टूबर के अंक में श्री सीताराम गुप्ता का लेख ''क्या श्राद्ध अथवा पिण्डदान का वास्तव में कोई औचित्य अथवा वैज्ञानिक आधार हैं?'' भ्रमोत्पादक और असम्बद्ध विचारों का घालमेल है। शीर्षक में दिये गये प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर डार्विन की थ्योरी और पौराणिक कल्पनाओं को मिलाने का असफल प्रयास किया गया है। कितना हास्यापद है यह प्रश्न कि पशु और कीड़े मकोड़े भी श्राद्ध करते थे या नहीं। लेखक ने पुराण कल्पित विष्णु के दश अवतारों को (जिनमें एक अभी तक प्रकट ही नहीं हुआ है) मनुष्य के विकास की अवस्थायें माना है। यदि एक कोशिकीय जीव से मनुष्य शरीर तक पहुंचने में क्रमशः (जलीय जंतु). मछली फिर जल थल का कछुआ फिर थल में रहने वाला सुअर बनना विकास क्रम है तो नभ में विचरण करने वाले पक्षियों को क्यों छोड़ दिया गया। और सुअर के बाद मनुष्य शरीर में ही वामन, परशुराम, राम, बलराम और कृष्ण के पांच अवतार क्यों हुए?इनमें भी राम और परशुराम तथा कृष्ण और बलराम तो समकालीन ही थे। अंतिम अवतार के पश्चात् पांच हजार वर्ष हो चुके हैं। इस अवधि में न तो मनुष्य का कोई विकास हुआ है और न कल्कि का अवतार। क्या ''यदा यदा हि धर्मस्य.... .....'' के आधार पर अब अधर्म होना पूर्णतः बन्द हो गया हैं?

लेख में विषय से हटकर काल्पनिक कथाओं के आधार पर केवल इतना संकेत दिया गया है कि ब्राह्मण को जिमाना हो तो श्रद्धापूर्वक भोजन कराना चाहिए। श्राद्ध का वास्तविक स्वरूप आर्यमित्र के २६ सितम्बर के अंक में प्रकाशित मेरे लेख ''सच्चा श्राद्ध'' में दिया गया है।

प्रताप कुमार 'साधक'
लखनऊ

पृष्ठ.१ का शेष भाग...

भीड़ जमा हो जाये तो मुझे कुछ बोलने को कह देना। संपेरा ५० रूपये के लालच में यह करता और प्रचारक आर्य समाज का संदेश पुरजोर ढंग से वहां फैलाते। समाज को सदा सचेत व जागृत करने के लिए आर्य समाज सदा कार्य करता रहेगा और सभी विकारों से रहित समाज राष्ट्र को बनाने में लगा रहेगा। वक्तव्य को विराम देते हुए प्रधान जी ने सभी आयोजकों, श्रोताओं का समारोह को उत्तम रीति से सम्पन्न कराने के लिए धन्यवाद दिया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री निरंजन सिंह मंत्री आर्य समाज राजाजीपुरम ने किया। श्राद्ध दिवस के विशेष समारोह में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान आचार्य वागीश शास्त्री प्राचार्य आर्ष गुरूकुल एटा का विधिवत् (श्राद्ध) फल, मिष्ठान्न व शाल भेंट करके सम्मान किया गया। उसके पश्चात आचार्य वेदव्रत अवस्थी, लखनऊ, डा. वेद प्रकाश आर्य, आचार्य संतोष वेदालंकार, डा. रूपचन्द्र दीपक, पं. शत्रुघ्नलाल मिश्र, डा.भानु प्रकाश आर्य, श्री मनोज मिश्र, सुश्री प्रतिज्ञा शास्त्री, श्री नेम प्रकाश आर्य धनुर्धर, रमेश चन्द्र त्रिपाठी का विधिवत् (श्राद्ध) सम्मान किया गया। श्री वागीश शास्त्री ने अपने प्रवचनों में जीवित व मृतक पितरों की श्राद्ध की वैज्ञानिक विवेचना की। आर्य समाज की ओर से ८० वर्ष की आयु से अधिक सदस्य व सदस्याओं का भी सम्मान किया गया। पूर्व की भांति परिवार वालों ने भी अपने परिवारीजनों का सम्मान किया।

उत्सव के प्रारम्भ में १२ से १४ अक्टूबर तक विविध परिवारों में यज्ञ व उपदेश हुए। १५ से १७ तक आर्य समाज के सभा कक्ष में यज्ञ, भजन और उपदेश हुए। १६ व १७ अक्टूबर को आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के सारगर्भित वेद प्रवचन हुए। उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों की सटीक व्याख्या करते हुए उन्हें अपने जीवन में अपनाने पर जोर दिया। दिनांक १७ अक्टूबर को स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती ने सर्वश्री आनन्द बरनवाल, श्री प्रेमशंकर शुक्ल, श्रीमती शारदा अरोड़ा, श्रीमती स्नेहलता, श्रीमती कमलेश गोयल को वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा दी। दीक्षा देते हुए उन्होंने वानप्रस्थ आश्रम के महत्व पर गंभीर प्रकाश डाला।

स्वामी जी ने कहा आर्य समाज में सभी अपने बच्चों को साथ लाने का संकल्प लें, बच्चे ही तो आगे नायक होते हैं। जैसा जीवन बालपन से बनायेंगे वैसा ही तो आगे वे चलेंगे व दूसरों को चलायेंगे।

नित्य प्रति यज्ञ की ब्रह्मा पद पर सुश्री प्रतिज्ञा शास्त्री ने यज्ञ को विधिवत सम्पन्न कराया।

१८.१०.२०१५ के विद्वानों के सम्मान के पश्चात् चारों दिन के यजमानों सर्वश्री डा.भानु प्रकाश आर्य सपत्नीक, श्री हरिश्चन्द्र बत्रा सपत्नीक, श्री काशी प्रसाद शास्त्री एवं श्री डा. आनन्द बरनवाल का सम्मान किया गया। ●●●

बेटियां – काव्य संकलन का वितरण

प्रधानमंत्री भारत सरकार श्री नरेन्द्र मोदी के उद्घोष ''बेटियां बचाओ, बेटियां पढ़ाओ'' पर हितेश कुमार शर्मा द्वारा स्वलिखित, स्वप्रकाशित मौलिक चतुष्पदियों का काव्य संकलन ''बेटियाँ'' का वितरण प्रसारण हेतु हितेश कुमार शर्मा द्वारा बिजनौर पब्लिक स्कूल, नजीबाबाद रोड, बिजनौर की शिक्षिकाओं एवं छात्राओं के बीच दिनांक १२.१०.१५ को १ बजे के लगभग हितेश कुमार शर्मा अपनी पुस्तिका लेकर श्री के.के.खन्ना, श्री एस.सी.जैन और भावना भारद्वाज के साथ विद्यालय प्रागंण में पहुँचे, जहां पर उनका स्वागत श्री महेन्द्र सिंह, मैनेजर बिजनौर पब्लिक स्कूल तथा उनकी धर्मपत्नी द्वारा किया गया। अपने संबोधन में हितेश कुमार शर्मा ने कहा कि ''शिक्षिकाओं से अपेक्षा है कि इस पुस्तक में लिखित संदर्भो को अपने अपने आसपास के लोगों को अवश्य अवगत करायें। जहां कन्या की उपेक्षा हो रही है उस घर में इस पुस्तक को अवश्य लेकर जायें और वहां इसे पढ़कर सुनायें। उद्घोष का प्रचार एवं प्रसारण ही हितेश कुमार शर्मा का मुख्य उद्देश्य हैं।

हरिओम सिंह

पं. नारायण दास तिवारी का 101 वां जन्म दिवस

झांसी जिले की आर्य समाज मोठ के वरिष्ठतम् सदस्य पं. नारायण दास तिवारी जी ने अपनी आयु के १०० वर्ष २८ सितम्बर २०१५ को पूर्ण किये। इस उपलक्ष्य में उनके परिवार ने उनका १०१ वां जन्म दिवस समारोहपूर्वक आयोजित किया। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद २७.६.१५ को सायंकाल प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

वेदारी लाल आर्य

५८, हाता प्यारे लाल, नगरा, झांसी

आर्य समाज एवं वैदिक इण्टर कालेज सिसौली मुजफ्फरनगर का वार्षिकोत्सव

दिनांक 28, 29 एवं 30 अक्टूबर 2015 को होगा

आर्य समाज एवं वैदिक इण्टर कालेज सिसौली मुजफ्फरनगर का वार्षिकोत्सव दिनांक २८ से ३० अक्टूबर १५ तक आयोजित है। उत्सव में आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती , स्वामी सत्यवेश जी आचार्य उमेश जी आगरा, पं. आर्यमुनि जी, पं. योगेश दत्त जी, हवा सिंह तूफान, श्री सोमपाल सिंह आदि के उपदेश एवं भजन होंगे।

नित्य प्रातः ८ से ११ बजे तक यज्ञ,भजन व प्रवचन अपराह्न २ से ५ बजे तक भजन एवं भाषण रात्रि ७:३० से १०:३० बजे तक भजनोपदेश होंगे।

डा. वीरेन्द्र सिंह राठी

पृष्ठ.३ का शेष भाग...

नहीं, किंतु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का है।'' ऐसा ही विचार रखते हुए महर्षि के पश्चात् भी अनेकों विद्वानों ने वित्तैषणा तथा लोकैषणा से दूर रहते हुए ज्ञान का प्रसार किया और आज भी कर रहे हैं। किंतु दुर्भाग्यवश कुछ आर्य समाजों के पदाधिकारीगण उपदेशकों को असत्य का खण्डन न करने का निर्देश देते हैं। वे उन्हें सत्य सिद्धान्तों को उद्घाटित करते हुए मिथ्या विश्वासों, आडम्बरों की पोल खोलने से रोक देते हैं। उनका विश्वास होता है कि ऐसा करने से श्रोता रूष्ट होकर 'हम से दूर हो जायेंगे तो आर्य समाज को आर्थिक सहयोग प्राप्त नहीं होगा। किंतु वे नहीं जानते कि ज्ञान के प्रसार के लिए अज्ञान को मिटाना आवश्यक होता है। जो विद्वान दक्षिणा के लोभ में अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते, वे सही अर्थो में उपदेशक कहे जाने के योग्य नहीं है। अपनी लच्छेदार भाषा में सत्य-असत्य कहानियों के साथ रोचक भाषण सुनाकर वे जनता की तालियां और यथेच्छ दक्षिणा तो बटोर सकते हैं, किंतु अपने दायित्व के प्रति न्याय नहीं करते। धार्मिक उपदेशकों का मुख्य उद्देश्य श्रोताओं के विषर्यय ज्ञान को हटाकर सत्य को उद्घाटित करना ही होना चाहिए।

४. मित्रो वा वनते गिरः- ईश्वर जिसकी वाणी को प्रभावी बनाता है। ईश्वर सर्वान्तर्यामी और सर्वज्ञ है। वह हम सबके उपदेशक के भी आन्तरिक भावों को तत्काल जान लेता है। जिस उपदेशक का उद्देश्य असत्य के विरूद्ध सत्य का प्रचार प्रसार करना होता है, वह ईश्वर की प्रेरणा से ऐसी वाणी बोलता है जिसका श्रोताओं के चित्त पर तुरंत प्रभाव पड़ता है। जो धनार्जन के लिए नहीं अपितु श्रोताओं को सन्मार्ग-दर्शन के लिए प्रवचन देता है, उसकी वाणी चमत्कारिक होती है। श्रोतागण उसके उपदेश को अपने आचरण में उतारने को समुद्यत हो जाते हैं। अनेकों उत्साही स्त्री पुरूष उसके लिए व्रत लेते हैं और आजीवन उसका निर्वहन भी करते हैं। ऐसे वैदिक उपदेशक आज के समय में भी उपलब्ध हैं। मैंने स्वयं ऐसे वास्तविक विद्वानों के उपदेश सुने हैं, जिन्होंने मेरे जीवन को प्रभावित किया है। उनका उपदेश बार बार सुनने और उनके सम्पर्क में अधिकाधिक समय तक रहने की इच्छा सदैव बनी रहती है। किंतु जिसने प्रवचन देना मात्र अपना व्यवसाय बनाया हुआ है, जो आशा से कम दक्षिणा प्राप्त होने पर व्यवस्थापकों से झगड़ा करते और रोष प्रकट करते हैं, अपने ज्ञान और प्रवचन को अन्य उपदेशकों से उच्चतर सिद्ध करने का प्रयास करते हैं स्वयं अपने उपदेशों से उच्चतर सिद्ध करने का प्रयास करते हैं स्वयं अपने उपदेशों के विरूद्ध आचरण करते हैं, ऐसे अहंकारी, धन लोलुप, पुस्तकीय- विद्वान उच्चकोटि के वक्ता तो कहला सकते हैं, किंतु उपदेशक नहीं। उपरोक्त वेद मंत्र में बतलाए गए गुणों के अभाव में उन्हें उपदेश देने का अधिकार नहीं हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज के उत्सवों पर राजनेताओं तथा बहु प्रचारित शाब्दिक विद्वानों, कलाकार वक्ताओं को प्रचारार्थ, उपदेशकों का अवसर दिया जाये, तभी धार्मिक उपदेशों की सार्थकता होगी। ऐसे उपदेशकों से ही श्रोताओं के विचारों में परिवर्तन संभव है, जिसके द्वारा हम 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि' करने संबंधी महर्षि के आदेश और आर्य समाज के उद्देश्य का अनुपालन सुनिश्चित कर सकेंगे। ध्यान रहे सार्थक वेद प्रचार के द्वारा ही हम ऋषि-ऋण से उऋण हो सकते हैं।

मो- ६४५०००१४४१

वैदिक धर्म सनातन है

सूर्य देव चौधरी

सुनो सुनो ए दुनियावालों! वैदिक धर्म सनातन है।
जितनी पुरानी सृष्टि, उतना ही वेद पुरातन है।।
राम-चित्र की पूजा करते चरित्र नहीं अपनाते हैं।
योगेश्वर थे जो, उनका भोगेश्वर रूप दिखलाते हैं।
पूर्वजों के चरित्र छोड़ जो चित्र-पूजा अपनाते हैं।
होते हैं आरक्षित वे तो, अपना अस्तित्व गंवाते हैं।।
राम-कृष्ण की सच्ची पूजा, वैदिक धर्म स्थापन है।।
सुनो सुनो ए.....

धन से ईसाइयत, हिंसा से हुआ इस्लाम का विस्तार है,
हिंसा-विरूद्ध जन्मा बौद्ध, कर रहा मांस का आहार है,
पुराणों का भी क्या कहना, न गप्प का कोई पारावार है,
व्यक्ति-जात मतो का न कोई पूर्ण सत्य आधार है।।
इन मिथ्या मतो के कारण, अभी वेद सूर्य तमाच्छन है।।
सुनो सुनो ए.....

बाइबिल की धरा चपटी, सूरज भ्रमण करता है,
कुरान का विज्ञान नबी चांद के टुकड़े करता है,
बौद्ध मत सिद्धान्त भी विज्ञान पर कहां ठहरता है,
पौराणिक गप्प भी सत्य पर खरा नहीं उतरता है।।
विज्ञान ने इन ग्रंथों का हिला दिया अब आसन है।।
सुनो सुनो ए.....

सर्वज्ञ ईश ज्ञान में, विज्ञान विरोध का स्थान नहीं है,
कहते है जो वेद कहता आधुनिक विज्ञान वही है,
वेद विज्ञान दोनों में धरती सदा गतिमान रही है,
ग्रहों सहित सूर्याकर्षण में यह वर्तमान मही है।।
आज विज्ञान ही कर रहा वैदिक सत्य का सत्यापन है।।
सुनो सुनो ए.....

कहता है 'ब्राउन' विज्ञान वैदिक धर्म का आधार है,
'जैकोलियट' के शब्दों में वैज्ञानिक वेद के विचार है,
'ह्वीलर'की दृष्टि में विद्युत विमान ऋषि अविष्कार है,
स्नायु तंत्र ज्ञान, ऋग्-अपदान 'रैले' के अनुसार है।।
विद्वानों के कथनों से हो रहा अब वेद का विज्ञापन है।।
सुनो सुनो ए दुनियावालों वैदिक धर्म सनातन है।।

आर्य समाज मानसरोवर लखनऊ का 21वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मानसरोवर, सेक्टर-एफ, पराग डेरी, कानपुर रोड, लखनऊ का २१वां वार्षिकोत्सव दिनांक ०१ नवम्बर २०१५ को प्रातः ७:३० बजे से दोपहर १:०० बजे तक बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। आमंत्रित विद्वान श्री प्रताप कुमार 'साधक', डा. शिवदत्त पाण्डेय (सुल्तानपुर) भजनोपदेशक श्री राधेमोहन जी तथा यज्ञ के ब्रह्मा श्री संतोष वेदालंकार जी हैं।

प्रबोध जौहरी, प्रधान

माता सुमित्रा देवी आर्या दिवंगत

प्रिय परिवार की स्नेहमयी माता श्रीमती सुमित्रा देवी आर्या, सिद्धान्त रत्न (८४ वर्ष) धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री देवप्रिय आर्य सिद्धांत शास्त्री सोनीपत का निधन दिनांक ३० अगस्त २०१५ को हुआ। उनका अंत्येष्टि संस्कार गुडगांव में किया गया तथा प्रार्थना सभा २ सितम्बर २०१५ को आर्य समाज सेक्टर १४, सोनीपत में लगभग ४०० लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

शोक समाचार

आर्य समाज पुरानी मण्डी, सहारनपुर के वरिष्ठ सदस्य श्री प्रकाश चन्द्र सैनी का आकस्मिक निधन दिनांक २०.१०.२०१५ को हो गया। सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने उन्हें शोक संवेदना व्यक्त कर सभा में २ मिनट का मौन रख कर दिवंगत आत्मा के प्रति सद्गति एवं दुखी परिजनों को मनःशान्ति एवं धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

निर्वाचन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, मिरजापुर

प्रधान	-	श्री श्याम नारायण सिह चौकियां
मंत्री	-	विजय नारायण सिंह धनैता
कोषाध्यक्ष	-	श्री शिव केदार सिंह गांगपुर

आर्य समाज बगहा मिर्जापुर का निर्वाचन सम्पन्न

प्रधान	-	श्री राजकुमार सिंह
मंत्री	-	श्री अमर नाथ सिंह
कोषा.	-	श्री वंश बहादुर सिंह

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

!! ओ३म् !!
''कृण्वन्तो विश्वमार्यम''

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. लखनऊ एवं जिला सभा हापुड़
के तत्वावधान में
गुरूकुल महाविद्यालय पूठ, गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ की
रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में

उ.प्र. प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन-(गुरूकुल पूठ) हापुड़

६, ७ व ८ नवम्बर २०१५ दिन शुक्रवार, शनिवार व रविवार

महोदय,

आपको जानकर हर्ष होगा कि आपके प्रिय गुरूकुल महाविद्यालय पूठ निकट गढ़ मुक्तेश्वर जिला हापुड़ (उ.प्र.) के रजत जयंती के पावन अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. द्वारा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया है। इस अवसर पर युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन, यज्ञ योग सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, गुरूकुल सम्मेलन आर्य महासम्मेलन के माध्यम से भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण द्वारा सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन कर समाज एवं परिवार में मधुरता लाने के लिए तथा आपके परिवार में सुख शांति एवं स्वास्थ्य का वातावरण पैदा किया जायेगा। आत्मीयता से वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता की रक्षा होगी। सम्मेलन के विचारों से माता पिता को सम्मान एवं वृद्धों का आशीर्वाद लेकर आप अपने जीवन को जीने की कला सीख सकेंगे। अतः आप अभी से गुरूकुल पूठ आने का निश्चित संकल्प कर लेवें। सम्मेलन की सफलता के लिए आर्यजगत् के मूर्धन्य उच्च कोटि के सन्यासी, विद्वान, उपदेशक, आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप अपने अपने क्षेत्र एवं जिलों से अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढायेंगे। यह हमारा सौभाग्य होगा।

-ः कार्यक्रम प्रतिदिन ः-

प्रातः ५:३० बजे से ७:०० बजे तक	योग साधना, आसन प्राणायाम द्वारा रोगनिवृत्ति
प्रातः ७:०० बजे से ६:३० बजे तक	यज्ञ, भजन, आध्यात्मिक उपदेश
प्रातः १० बजे से १:०० बजे तक	सम्मेलन एवं सम्मान समारोह
मध्यान्ह १ बजे से ५:३० बजे तक	भजन, सम्मेलन, व्यायाम प्रदर्शन
रात्रि ७:०० बजे से १०:०० बजे तक	भजन, उपदेश, सम्मेलन

नोटः- यह गुरूकुल गढ़ मुक्तेश्वर गंगा किनारे ग्राम पूठ में स्थित है। गढ़मुक्तेश्वर से डहराकुटी होते हुए बहादुरगढ़ थाना से भी बस सवारी मिलेगी।

देवेन्द्र पाल वर्मा — प्रधान
धर्मेश्वरानन्द सरस्वती — सभामंत्री
डा. धीरज सिंह — कोषाध्यक्ष
ज्ञानेन्द्र गांधी — मुख्य संयोजक
विकास आर्य — संयोजक

गुरुकुल के अधिकारीगण- **सत्यानन्द आर्य** (अध्यक्ष), **सुशील अग्रवाल** (अध्यक्ष ट्रस्ट), **प्रणवानन्द सरस्वती** (प्रबन्धक), **रमेश चन्द्र शास्त्री** (मन्त्री)
सत्येन्द्र सिंह पंवार (अधिष्ठाता), **सत्यवीर चौधरी** (अध्यक्ष-गौशाला), **संजीव रामा** (प्रबन्धक-गौशाला), **शौदान आर्य** (उपाध्यक्ष), **महेश आर्य** (कोषाध्यक्ष), **चन्द्रपाल आर्य** (उपमंत्री), **राजीव आचार्य** (प्राचार्य)

सह-संयोजक-धनन्जय भाटी, अजय दादू, अनिल आर्य, अशोक आर्य जिला मंत्री, ज्ञानेन्द्र चौधरी-जिला कोषाध्यक्ष आनन्द आर्य, नरेन्द्र आर्य, राजेन्द्र सिंह-प्रबन्धक, दिनेश खेड़ा, प्रमोद आचार्य, बाबू सुरेन्द्र सिंह, जितेन्द्र सिंह, जगवीर सिंह, सुन्दरलाल आर्य, ओ.पी. गौतम, प्रियपाल चौ., मा. ज्ञानेन्द्र सिंह, जनमेजय शास्त्री
प्रदेश-उपाध्यक्ष-गायत्री दीक्षित, मनमोहन तिवारी, अरविन्द आर्य, बेचन सिंह आर्य, पूरण सिंह ब्रह्मचारी
प्रदेश-उपमंत्री-हरपाल सिंह आर्य, गिरिजा त्रिपाठी, शिव कुमार आर्य, राम कुमार सिंह, रामचन्द्र सिंह आर्य

विद्वान लेखकों से विनम्र अनुरोध

गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी दीपावली (ऋषि निर्वाण पर्व) के अवसर पर आर्य मित्र का विशेषांक (ऋष्यंक) प्रकाशित होना है।

सभी विद्वानों से विनम्र अनुरोध है कि वे अपनी उत्तम रचनायें (लेख गीत) आदि अविलम्ब हमें भेजने की कृपा करें। आपका सहयोग ही हमारा संबल है। सभी आर्य संस्थायें अपने संस्थाओं के प्रकाशनार्थ विज्ञापन भी अवश्य भेजें।

सम्पादक

सभा प्रधान जी के आगामी कार्यक्रम

दिनांक	१.११.२०१५	अन्तरंग सभा की बैठक, आगरा
दिनांक	६, ७, ८.११.२०१५	गुरूकुल पूठ, हापुड़
दिनांक	६.११.२०१५	आर्य समाज इस्लामनगर, बदायूँ
दिनांक	२२.११.२०१५	रानीमण्डी, इलाहाबाद
दिनांक	१३.१२.२०१५	जिला आर्य प्रतिनिधि सभा सुल्तानपुर

आर्य समाज राजाजीपुरम्, लखनऊ-उत्... चित्र

मेरी भी इज्जत हैं

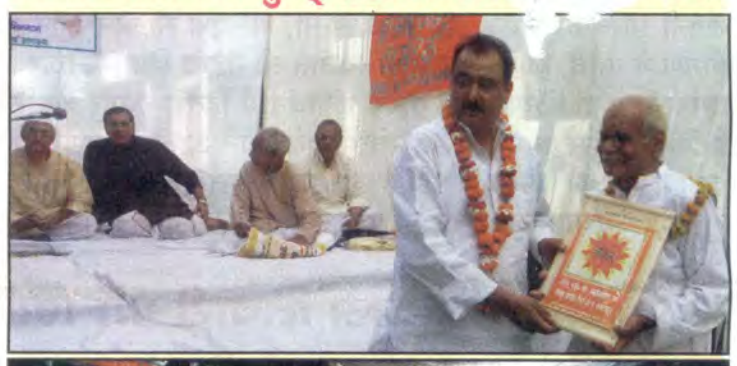

ऐ हब्शी नहीं बचा अब कुछ पास है मेरे,
बेसकीमती इज्जत मेरी लूट लिया तूने लुटेरे।
बेबस हूँ नहीं तो तेरा कत्ल मैं करती,
गर बच गई तो बोटी-बोटी करूँगी तेरे।।
मांओ जागों, बहनों जागो,
अरे बेटियों तुम जाग तो जाओ।
इन सिरफिरों को जमकर मारो,
कहो बन गई रानी झांसी बतलाओ।।
तड़पा तड़पा कर मारो इनको,
रहम न करना, ये है लुटेरे।
बेबस हूँ नहीं तो तेरा कत्ल मैं करती,
गर बच गई तो बोटी-बोटी करूँगी तेरे।।
तुझे भाई कहते, शर्म है लगती,
मर्द के नाम पर तू है कलंक।
समय रहते, गर नहीं तू सम्हला,
वजूद मिटा दूंगी मार के डंक।।
बुरे कर्म की है तुझे सजा भुगतनी,
नेस्त-नाबूद करूँगी, अहम को तेरे।
बेबस हूँ नहीं तो तेरा कत्ल मैं करती,
गर बच गई तो बोटी-बोटी करूँगी तेरे।।
सौगंध तुम्हें ऐ महिलाओं, बालाओ,
जमीर को अपने फिर से जगाओ।
दरिन्दा भले हो, तुम्हारे घर का,
सजा उसे दो न दया दिखाओ।
मौत का भागीदार है तू, तुझे चहुँओर से घेरे,
पिता ''सागर'' है आंख तरेरे।
बेबस हूँ नहीं तो तेरा कत्ल मैं करती,
गर बच गई तो बोटी-बोटी करूँगी तेरे।।

-डा. बी.पी. सागर, अंतरंग सदस्य
आ.प्र.स., उत्तर प्रदेश, लखनऊ

अन्तरंगाधिवेशन सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ की आगामी अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक १.११.२०१५ दिन-रविवार तदनु-कार्तिक कृष्ण षष्ठी को प्रातः ११:०० बजे से सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा की अध्यक्षता में आर्य समाज नामनेर आगरा सभागार में होना सुनिश्चित हुआ है। सभी पदाधिकारी व अन्तरंग सदस्य व विशिष्ट सदस्यगण समय से पहुंचकर अन्तरंग को सफल बनाने में सहयोग दें। अन्तरंग सभा का (एजेण्डा) विषय-सूची पृथक् डाक से सभी को भेज दिया गया है।

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक-श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है-सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।